कृषि लोक
कृषि एवं किसान के लिए ई-पत्रिका
http://www.rdagriculture.in
e-ISSN No. 2583-0937
कृषि लोक,खंड 03 (01): 49-51-, 2023

रंगीन शिमला मिर्च की खेती

कैसे करें लाखों की कमाई, जानें

अखिल कुमार चौधरी, रजत कुमार मौर्या[1] एवं निमित सिंह

सब्जी विज्ञान विभाग, उद्यान महाविद्यालय
नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश।
[1]सब्जी विज्ञान विभाग, उद्यान महाविद्यालय
चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय नवाबगंज, कानपुर, उत्तर प्रदेश।

Received: Dec 25, 2022; Revised: Dec 27, 2022 Accepted: Dec 27, 2022

शिमला मिर्च (Capsicum) का नाम सुनते ही दिमाग में तीखे और चटपटे से स्वाद की अनुभूति होती है। भारत के लगभग हर रसोई घर में शिमला मिर्च (Shimla mirch) का उपयोग सब्जी और अन्य चाइनीज व्यंजन में स्वाद लाने के लिए किया जाता है।

बाजार में भी लाल, पीली, बैंगनी, नारंगी और हरी रंग की शिमला मिर्च खूब देखने को मिलती हैं। शिमला मिर्च को इंग्लिश में कैप्सिकम (Capsicum) और बेल पेपर (Bell Pepper) के नामों से जाना जाता है।

आयुर्वेद में भी शिमला मिर्च (capsicum)का इस्तेमाल औषधि के रूप किया जाता है। क्योंकि इसमें विटामिन ए, विटामिन सी, विटामिन के, फाइबर और कैरोटीनॉयड जैसे पोषक तत्व मौजूद होते हैं। इसके अलावा किसानों को हरी मिर्च की खेती से ज्यादा लाभ शिमला मिर्च की खेती में होता है।

शिमला मिर्च के लिए जरूरी जलवायु

शिमला मिर्च (Shimla mirch) को पहाड़ी क्षेत्रों में गर्मियों के मौसम में और मैदानी भागों में गर्मी और बरसात में उगाते हैं। इसकी खेती के लिए नर्म आर्द्र जलवायु को अच्छा माना जाता है। क्योंकि शिमला

e-ISSN No. 2583-0937

मिर्च के पौधे आर्द्र और कम गर्म जलवायु में अच्छे से विकसित होते हैं। वहीं, इसकी फसल को पकाने के लिए शुष्क जलवायु को बेहतर माना जाता है।
शिमला मिर्च के बीज के अंकुरण के लिए 16-29 डिग्री सेल्सियस, पौधे की अच्छी बढ़त के लिए 21-27 डिग्री सेल्सियस और फलों के उचित विकास और परिपक्वता के लिए 32 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा तापमान होना चाहिए।

शिमला मिर्च के लिए उपयुक्त मिट्टी

शिमला मिर्च की खेती के लिए बलुई दोमट मिट्टी अच्छी होती है। जिसमें कार्बनिक पदार्थ अच्छी मात्रा में मौजूद हो और जल निकासी भी बेहतर हो। वहां शिमला की खेती से अच्छा उपज लिया जा सकता है।

शिमला मिर्च की खेती का समय

शिमला मिर्च की खेती (shimla mirch ki kheti) साल में 3 बार की जा सकती है। इसकी पहली बुआई जून से जुलाई तक, दूसरी बुआई अगस्त से सितंबर और तीसरी बुआई नवंबर से दिसंबर की जा सकती है। इसके बीज बोने के बाद, उससे निकलने वाले पौधे की रोपाई की जाती है। जिसका अच्छा समय जुलाई से अगस्त, सितंबर से अक्टूबर और दिसंबर से जनवरी होता है।
हमारे देश में मौसम के अनुसार शिमला मिर्च की खेती वर्ष में 3 बार की जा सकती है।

1. सितंबर-अक्टूबर में तुड़ाई के लिए- नर्सरी में बीज को जून-जुलाई में लगाना चाहिए। मुख्य खेत में जुलाई-अगस्त में पौधों की रोपाई करें।
2. नवंबर-दिसंबर में तुड़ाई के लिए- नर्सरी में बीज की बुवाई अगस्त से सितंबर में करें। मुख्य खेत में पौधों की रोपाई सितंबर-अक्टूबर में की जाती है।
3. फरवरी-मार्च में तुड़ाई के लिए- नर्सरी में बीज की बुवाई के लिए नवंबर-दिसंबर महीने में करें। मुख्य खेत में पौधों की रोपाई दिसंबर से जनवरी महीने में करें।

खेती की तैयारी कैसे करें?

शिमला मिर्च (Shimla mirch) के पौधों की रोपाई से पहले खेत को अच्छे से 5-6 बार जुताई करें।
जुताई के पहले खेत में गोबर की खाद को अच्छी तरह से मिला लें। उसके बाद खेत में 90 सेमी चौड़ी क्यारियां बना लें। इसके एक पौधे की रोपाई, दूसरे पौधे से लगभग 45 सेमी की दूरी पर करें। एक क्यारी में पौधों की केवल दो कतारें ही लगाएं।

सिंचाई और उर्वरक प्रबंधन

शिमला मिर्च की खेत तैयार करते समय उसमें लगभग 25 से 30 टन गोबर की सड़ी खाद को मिला लें। सिंचाई की बात करें तो शिमला मिर्च की फसल को ज्यादा और कम पानी दोनों से नुकसान हो सकता है। इसलिए यदि मिट्टी में नमी कम हो तो उसकी तुरंत सिंचाई और पानी का भराव ज्यादा होने पर उसके निकास की व्यवस्था भी तुरंत करनी चाहिए। शिमला मिर्च की फसल की सिंचाई आमतौर पर गर्मी के दिनों में एक सप्ताह और शीत के दिनों में 10 से 15 दिनों में करनी चाहिए।
इसकी खेती में वो ड्रिप इरीगेशन विधि का इस्तेमाल कर रहे हैं। यह खेती के लिए सबसे उत्तम सिंचाई विधि है। उन्होंने कहा कि किसान पारंपरिक रूप से पानी लगाने की विधि से धीरे-धीरे बाहर आ रहे हैं। इस विधि में पैसा लगने के बाद पानी की बचत साथ ही जरूरत के अनुसार पानी लगाया जा सकता है। खर्च बचता है और उत्पादन अच्छा होता है। इस विधि के जरिए हम खाद का इस्तेमाल भी सही तरीके से कर सकते हैं. सरकार इस विधि पर बड़ी छूट दे रही है।

शिमला मिर्च की उन्नत किस्में

शिमला मिर्च मुख्य तौर 3 प्रकार की हरी, लाल और पीली रंग की होती हैं। आपको इसकी कुछ उन्नत किस्मों के बारे में जानकारी होना आवश्यक है।

इन्द्रा : यह संकर किस्मों में शामिल है। शिमला मिर्च की इस किस्म के पौधे मध्यम ऊंचाई के होते हैं। इस किस्म की मिर्च मोटी व गुदे वाली होती है। प्रत्येक मिर्च का वजन 100 से 150 ग्राम का होता है। इस

e-ISSN No. 2583-0937

किस्म की एक एकड़ भूमि में खेती करने पर 110 क्विंटल तक की पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

बॉम्बे (रेड):

यह शिमला मिर्च की जल्दी पकने वाली किस्मों में से एक है। बॉम्बे रेड किस्म के पौधे लम्बे, मजबूत एवं फैलने वाले होते हैं। मिर्च का सही तरीके से विकास के लिए इसकी खेती के लिए छांव वाले स्थान का चयन करना उपयुक्त होता है। कच्चे मिर्च का रंग गहरा हरा होता है। मिर्च के पकने पर लाल रंग के हो जाते हैं। इस किस्म के प्रत्येक मिर्च का वजन 125 से 150 ग्राम तक का होता है। इस मिर्च को ज्यादा समय के लिए स्टोर करके रखा जा सकता है। यह ज्यादा दूरी वाले स्थान पर ले जाने के लिए उचित होते है।

ओरोबेल (येलो मिर्च) :

इस किस्म की खेती मुख्यता ठंड के मौसम में की जाती है। इस किस्म की खेती ग्रीन हाउस के साथ-साथ खुले खेत में भी सफलतापूर्वक की जा सकती है। इस किस्म की मिर्च पकने के बाद पीले रंग की हो जाती हैं। प्रत्येक मिर्च का वजन करीब 130 से 150 ग्राम तक का होता है। यह किस्म कई रोगों के लिए प्रतिरोधी है।

सोलन हाइब्रिड 2 :

यह किस्म अधिक पैदावार देने वाली किस्मों में से एक है। इस किस्म के पौधों की रोपाई के करीब 60 से 65 दिनों बाद मिर्च पककर तुड़ाई के लिए तैयार हो जाती हैं। इस किस्म में सड़न रोग एवं जीवाणु जनित रोगों से लड़ने की क्षमता अधिक होती है। सोलन हाइब्रिड 2 की एक एकड़ भूमि में खेती करने पर 130 से 150 क्विंटल तक की पैदावार आसानी से प्राप्त हो सकती है।

पूसा दीप्ती शिमला मिर्च :

पूसा दीप्ती शिमला मिर्च हाइब्रिड किस्म की शिमला मिर्च है। इस किस्म के शिमला मिर्च के मिर्च का रंग हल्का हरा होता है जो पकने के बाद गहरे लाल रंग में परिवर्तित हो जाता है। पौधे की रोपाई के 70 से 75 दिनों के बाद मिर्च पकने लगती है एवं तुड़ाई के लिए भी तैयार हो जाती है।

इन किस्मों के अलावा हमारे देश में शिमला मिर्च की कई अन्य किस्मों की खेती भी बड़े पैमाने पर की जाती है। जिनमें भारत, ग्रीन गोल्ड, सोलन हाइब्रिड 1, यलो वंडर, कैलिफोर्निया वंडर, अर्का गौरव, अर्का मोहिनी, हरी रानी, किंग ऑफ नार्थ, आदि किस्में शामिल हैं।फल सिर्फ 75 दिन में मिलना शुरू हो जाता है।

किसान ने बताया कि खेत में क्यारियां बनाने के बाद उन्होंने शिमला मिर्च की तैयार पौध को उचित दूरी पर रोप दिया था। समय-समय पर सही खाद पानी और कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करके उत्तम फसल प्राप्त की है। शिमला मिर्च की खेती के लिए जमीन का पीएच मान 6 होना चाहिए। शिमला मिर्च का पौधा 40 डिग्री तक का तापमान सह सकता है और करीब रोपाई के 75 दिन बाद पौधा पैदावार देना शुरू कर देता है। एक हेक्टेयर में करीब 300 क्विंटल शिमला मिर्च की पैदावार होती है।

शिमला मिर्च की खेती में लागत और कमाई

एक एकड़ में जमीन पर शिमला मिर्च की खेती (Shimla mirch ki kheti) करने का खर्च लगभग 4.26 लाख हो सकता है। जिसमें लगभग 15,000 किलोग्राम शिमला मिर्च की खेती की जा सकती है। चूंकि शिमला मिर्च की औसत बिक्री दर 50 रुपए प्रति किलोग्राम रहती है। इस हिसाब से 15,000 किलोग्राम शिमला मिर्च की बिक्री से प्राप्त होने वाली राशि होगी 7,50,000। अब इसमें से खर्चे या लागत को निकाल दिया जाए तो एक एकड़ भूमि पर शिमला मिर्च की खेती करके लगभग 3 से 3.50 लाख रुपए तक का मुनाफा कमाया जा सकता है।